International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 26-30

उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यार्थियों का अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० पी० के० नायक[1], शशि मिश्रा[2]

[1] प्रोफेसर एवं डीन विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एम.फिल शोधार्थी, शिक्षा–शास्त्र विभाग, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
उचित अध्ययन आदत केवल बालक का चहुमुखी विकास नहीं करता है, बल्कि यह संपूर्ण समाज का विकास करता है। जिससे बालक के वातावरण के अनुकूल होने से बालक का पूर्ण विकास होते रहता है तथा उसमें अच्छी आदतें, सदाचारी आदतें वातावरणी होती जाती है। इस कारण उचित अध्ययन आदत आवश्यक है।

मूल शब्द : उचित अध्ययन आदत, चहुमुखी विकास, बालक का पूर्ण विकास।

प्रस्तावना
शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन को विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ–प्रदर्शन करता है। शिक्षा के द्वारा प्राप्त प्रकाश से हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाईयों का निवारण होता है और जीवन के वास्तविक महत्व को समझने की शक्ति उत्पन्न करती है। इस प्रकार संक्षेप में कहा जाय तो शिक्षा समाज में चलने वाली अनवरत प्रक्रिया है, जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बालक के विकास का प्रयास किया जाता है। समाज के अनुकूल बालक के व्यवहार को परिवर्तित करके उसे समाज का एक मानवीय व स्वीकृत सदस्य बनाया जाता है। परन्तु आज के इस आधुनिक युग में बालक के व्यक्तित्व में जो परिवर्तन लाने का प्रयास करते है, ये महत्वपूर्ण अंग है।

आदत और शिक्षा
शिक्षा का मुख्य लक्ष्य किसी भी व्यक्ति का शिक्षा द्वारा पूर्ण रूप से विकास करना है। इसे निर्माण करने के लिए शिक्षक का प्रमुख योगदान रहता है। बच्चों में अध्ययन की आदत का निर्माण करने से निम्न लाभ है–

1. उचित अध्ययन आदत से विद्यार्थियों की शक्ति और समय की बचत होती है।
2. उचित अध्ययन आदत से बच्चे समाज का सामना करना सीखते है।
3. उचित अध्ययन से अच्छे चरित्र का निर्माण होता है।
4. उचित अध्ययन आदत से बालक स्वयं को ज्यादा प्रभावशाली बना सकते है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व
शिक्षा का मुख्य कार्य होता है कि बालक के आदत और समस्यात्मक कार्यो को करने कि आदत निर्माण करे। बालकों में उचित अध्ययन आदत का विकास करने में अध्यापक बालक की सहायता करता है। उचित अध्ययन आदत होने से व्यक्ति अपने सामने आने वाली कइिनाइयॉ जो उसे समाज मे समायोजन करने के समय सामने आती है, बालक उसका सामना करके अपने समायोजन के अनुसार वातावरण का निर्माण कर सकता है। बच्चों में उचित अध्ययन आदत के निर्माण करने से बच्चों और समाज को निम्नलिखित लाभ होता है–

1. विद्यार्थियों को जो विषय संबंधी अध्ययन करना है उसका उद्देश्य ठीक प्रकार से समझा दिया जाना चाहिए।
2. अध्ययन के समय थोड़ी–थोड़ी देर में विश्राम कर लेना चाहिए।
3. जब अध्ययन कर रहे हो तो मौन पाठ करना चाहिए।
4. उचित अध्ययन आदतों से विद्यार्थियों के समय व शक्ति की बचत होती है।
5. उचित अध्ययन आदत से बालक सामाजिक समस्याओं का सामना करना सीखता है।
6. बालक के चरित्र के निर्माण भी उचित अध्ययन आदत के द्वारा किया जा सकता है।
7. अगर बालक समाज में अपने का अधिक प्रभावशाली दिखाना चाहता है तो उसे उचित अध्ययन आदत की आवश्यकता होगी।
8. अगर उचित अध्ययन आदत बालक में है तो बालक समय, धन और शक्ति का सद्पयोग करना सीख जायेगा।

अध्ययन का औचित्य
शिक्षा का मुख्य कार्य होता है कि बालक के आदत और समस्यात्मक कार्यों को करने कि आदत निर्माण करें। बालकों में उचित अध्ययन आदत का विकास करने में अध्यापक बालक की सहायता करता है। उचित अध्ययन आदत होने से व्यक्ति अपने सामने आने वाली कइिनाइयॉ जो उसे समाज मे समायोजन करने के समय सामने आती है, बालक उसका सामना करके अपने समायोजन के अनुसार वातावरण का निर्माण कर सकता है। उचित अध्ययन आदत केवल बालक का चहुमुखी विकास नहीं करता है, बल्कि यह संपूर्ण समाज का विकास करता है। जिससे बालक के वातावरण के अनुकूल होने से बालक का पूर्ण विकास होते रहता है तथा उसमें अच्छी आदतें, सदाचारी आदतें वातावरणी होती जाती है। इस कारण उचित अध्ययन आदत आवश्यक है।
मैंने अपने अध्ययन में यह अनुभव किया कि आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत केवल बालक पर ही

नही अपितु इसका प्रभाव संपूर्ण समाज पर अनुकूल पड़ता है। यह प्रभाव बालक पर कितना और किस सीमा तक पड़ता है, शोध के माध्यम से इसी जिज्ञासा समाधान हेतु मैने इस विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यार्थियों का अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के गैर–आवासीय छात्रो एवं छात्राओं के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्रों एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्राओं एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत का अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के गैर–आवासीय छात्रो एवं छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्रों एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
7. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्राओं एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लाक में आवासीय एवं गैरआवासीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर ही किया जायेगा।
2. इस अध्ययन में 15–18 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन एम.फिल की उपाधि प्राप्त करने हेतु एक वर्षीय पाठ्यक्रम के समय सीमा में बंधित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के शैक्षिक अनुसंधान एवं परिषद द्वारा अध्ययन आदत सुधार के अन्तर्गत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों पर अध्ययन आदत पाठ्यक्रम विषय–वस्तु पर आधारित है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन के लिए बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लाक को लिया गया है। इस जिले में आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यार्थियों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष विधि से किया गया है।

न्यादर्श

मैं बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लाक के आवासीय एवं गैर–आवासीय विद्यालयों को लिया गया है। इन विद्यालयों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

तालिका 1: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के न्यादर्ष हेतु चयनित विद्यार्थियों की संख्या

क्र.	विद्यालय के नाम		छात्र	छात्राएं	योग
	आवासीय	गैर आवासीय			
1.	डी.पी.एस. उ.मा.शा. बिलासपुर	बंगाली उ.मा.शा. बिलासपुर	20	20	40
2.	दि.जैन इंटरनेशनल उ.मा. शा. उस्लापुर बिलासपुर	आंध्रसमाज उ.मा.शा. बिलासपुर	20	20	40
3.	सेंट जेवियर्स उ.मा.शा. बिलासपुर	भारतमाता उ.मा.शा. बिलासपुर	20	20	40
	कुल योग –		60	60	120

चरांक

स्वतंत्र चर	–	अध्ययन आदत
आश्रित चर	–	आवासीय एवं गैर–आवासीय
सहचरित चर	–	लिंग (बालक, बालिका)

प्रयुक्त उपकरण

एम.एन.पालसेन तथा अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी का प्रयोग शोध में शोधकर्ता द्वारा किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियॉ मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि, टी–मूल्य परीक्षण, स्वतंत्र कोटी द्वारा किया गया हैं।

निष्कर्ष

$H0_1$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 2

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (118)	t	परिणाम
1.	आवासीय विद्यार्थियों	60	63.16	14.86	2.61	0.05 = 1.98	2.36	अस्वीकृत
2.	गैर आवासीय विद्यार्थियों	60	57.0	13.74		0.01 = 2.62		

निष्कर्ष : यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर पाया जाता है।

$H0_2$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 3

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	आवासीय छात्रों	30	67.83	11.35	3.64	0.05 = 2.00	2.56	अस्वीकृत
2.	आवासीय छात्राओं	30	58.5	16.43		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्रों तथा छात्राओं अध्ययन आदतों में सार्थक अतंर नही पाया जाता है।

$H0_3$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के गैर–आवासीय छात्रों एवं छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 4

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	गैर आवासीय छात्रों	30	60.5	13.3	3.42	0.05 = 2.00	2.04	अस्वीकृत
2.	गैर आवासीय छात्राओं	30	53.5	13.22		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के गैर–आवासीय छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर नहीं पाया गया।

$H0_4$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 5

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	आवासीय छात्रों	30	67.53	11.35	3.19	0.05 = 2.00	2.29	अस्वीकृत
2.	गैर आवासीय छात्रों	30	60.5	13.3		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर नहीं पाया जाता है।

$H0_5$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 6

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	आवासीय छात्राओं	30	58.5	16.43	3.84	0.05 = 2.00	1.3	स्वीकृत
2.	गैर आवासीय छात्राओं	30	53.5	13.22		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर नही पाया जाता है।

$H0_6$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्रों एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 7

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	आवासीय छात्रों	30	67.83	11.35	3.17	0.05 = 2.00	4.52	अस्वीकृत
2.	गैर आवासीय छात्राओं	30	53.5	13.22		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर नही पाया जाता है।

$H0_7$: उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय छात्राओं एवं गैर–आवासीय छात्रों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 8

क्र	समूह	N	M	SD	S_{ED}	सारणीगत मान (58)	t	परिणाम
1.	आवासीय छात्राओं	30	58.5	16.43	3.85	0.05 = 2.00	0.51	स्वीकृत
2.	गैर आवासीय छात्रों	30	60.5	13.3		0.01 = 2.66		

निष्कर्ष : उच्चतर माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर–आवासीय छात्राओं के अध्ययन आदत में सार्थक अतंर नही पाया जाता है।

शैक्षिक महत्व

1. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यार्थी की प्रकृति, रूचियों, मनोवृत्तियों, क्षमताओं तथा योग्यताओं का ज्ञान होना आवश्यक है। इस दिशा में यह लघुशोध सहायक है।
2. शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि उच्च अध्ययन में उचित आदत का सह–सम्बन्ध होता है।
3. आवासीय और गैर आवासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत की जानकारी प्राप्त होती है।
4. शोध अध्ययन से ज्ञात हुअ है कि छात्राओं में छात्रों से अधिक रूचि होती है, अच्छी अध्ययन आदत में।
5. शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत उचित होती है, गैर आवासीय विद्यालय के अपेक्षा।
6. अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का ज्ञान होता है।
7. आवासीय व गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं की सही जानकारी प्राप्त होती है।

सुझाव

विद्यार्थियों के लिए सुझाव

1. विद्यार्थियों को प्रतिदिन अध्ययन क्रिया करनी चाहिए।
2. विद्यार्थियों को प्रतिदिन गृहकार्य करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को अपने अध्ययन अभ्यास करने के स्थान को साफ–सुथरा रखना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को अपने अध्ययन करने के स्थान पर ऐसी कोई भी वस्तु नही रखनी चाहिए जिससे ध्यान विचलित हो जाए।
5. विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय सकारात्मक सोच के साथ अध्ययन करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को पढ़ने के साथ–साथ अन्य बाहरी प्रवृत्तियों में भी रूचि लेनी चाहिए।
7. विद्यार्थियों को अध्ययन करने के समय अपना ध्यान व रूचि केन्द्रित करना चाहिए।
8. विद्यार्थियों को प्रतिदिन व्यायाम के साथ–साथ समय पर सोना व अच्छा खाना समय पर लेना चाहिए।
9. विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय चिन्ता मुक्त रहना चाहिए।
10. विद्यालय अवकाश का सद्पयोग किया जाना चाहिए।

शिक्षकों के लिए सुझाव

1. बच्चों में अच्छी आदत डालने के लिए शिक्षक को अच्छा उदाहरण देकर समझाना चाहिए।
2. एक शिक्षक को अनुशासन में रहना चाहिए, जिससे छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।
3. शिक्षकों को छात्रों को सही दिशा–निर्देश दिया जाना चाहिए।
4. शिक्षक को छात्र की अच्छी लिखावट के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
5. शिक्षक को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को अपने पाठ्य पुस्तक के साथ–साथ अन्य लेखकों की किताबों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों के कठिन परिस्थितियों में शिक्षक के द्वारा सही मार्ग–दर्शन करना चाहिए।
7. शिक्षकों को विद्यार्थियों के अच्छी आदतों की प्रशंसा करनी चाहिए।

अविभावकों के लिए सुझाव

1. उचित अध्ययन आदत के लिए अभिभावक को बच्चों को अच्छा वातावरण प्रदान करना चाहिए।
2. बच्चों को अध्ययन कराने हेतु अभिभावक को समय देना चाहिए।
3. अभिभावकों को अपने व्यवहार में अच्छी आदतों को रखना चाहिए, जिससे बालक अच्छी आदतों को ग्रहण कर सके।
4. बच्चों के बुरी आदतों को दूर करने हेतु कुछ प्रोत्साहन या प्रेरणा देकर समझाना चाहिए।
5. बुरी आदतों को दूर करने हेतु अभिभावकों को समय–समय पर दण्ड या डाटना चाहिए।

उपसंहार

आधुनिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों और अनुसंधान के कारण ही विकास की गति में तीव्रता आई है, फलतः घर का वातावरण भी प्रभावित हुआ है। घर में माता–पिता तकनीकी सुविधाओं की विभिन्न वस्तुओं को घर में ले आते है परिणाम स्वरूप बालक पर इसका तकनीकी या परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। बालक इन तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग दिन–प्रतिदिन करता है। अतः कभी–कभी बालक पर इनका कुप्रभाव भी पड़ता है। आज बालक मोबाइल, इण्टरनेट पर चैटिंग सर्फिंग के द्वारा अनैतिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। उनमें मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। बच्चे कच्ची उम्र में ही भटक जाते हैं। इसके अतिरिक्त यदि बालक को घर में अच्छा वातावरण न मिले तो उनका झुकाव अपराध की ओर अग्रसर होने लगता है। ''सामाजिक एवं संवेगात्मक आदतों के बारे में कुछ लोगों का मत है कि वे जन्मजात होती हैं। यह धारणा भ्रामक है वस्तु स्थिति यह है कि आदतें बालक अपने वातावरण से प्राप्त करता है। अतः स्पष्ट है कि उसकी इन आदतों पर घर के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा का केन्द्र परिवार है न कि स्कूल अतः इस शिक्षा के प्रति परिवार के सदस्यों का भारी दायित्व है इसलिए परिवार के सदस्यों को अत्यन्त संयम, सहानुभूति, प्रेम तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाना होता है लेकिन कभी–कभी माता–पिता बालकों को सिखाते समय उनके द्वारा गलती करने पर शारीरिक दण्ड देते है, जिससे बालक में नैराश्य की भावना उत्पन्न हो जाती है।''

अध्ययन आदत में वृद्धि की चाहत सभी रखते हैं खासतौर पर विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में इसकी ललक कुछ विशेष ही रहती है ज्यादातर विद्यार्थी किसी ऐसे नुस्खे, ऐसी तकनीकों की तलाश में रहते हैं जो उनकी बौद्धिक क्षमता को पर मन भी स्थिर होता है। साथ ही बुद्धि भी विकसित होती है। इस क्रम में दूसरा बिन्दु है– एकाग्रता इसके लिए जरूरी है कि अपने अध्ययन–विषय पर एकाग्र बनो। न समझ में आने के बावजूद उसे पूरी एकाग्रता से समझने की कोशिश करो। निरन्तर एकाग्रता का अभ्यास तुम्हारी समझ को अपने आप ही विकसित कर देगा।''

''बच्चों की सुकोमल देह कच्ची मानसिकता के लिए प्यार–पुचकार संजीवनी का कार्य करते हैं। प्यार भरे परिवेश में बच्चों का बहु आयामी विकास होता है। नवजात शिशु के दूध के समान स्नेह एवं प्यार की अहम जरूरत बच्चों की भी है। इसके अभाव में बच्चे मानसिक एवं भावात्मक रूप से पंगु हो जाते हैं और यह अभाव ही आज के नन्हें–मुन्ने बच्चों में तनाव अवसाद और हिंसा जैसी आदतें पैदा करता है।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, शेख और संगीता, ''किशोरावस्था में छात्रों के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक प्रेरणा परीक्षा चिन्ता में संबंध पर अध्ययन'' सारकोर्लिग्मुआ वाल्यूम –27

2. वर्मा, प्रीति (1989), ''बाल मनोविज्ञान बाल विकास'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. श्रीवास्तव, डी. एन., ''आधुनिक प्रयोगाात्मक मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक भंडार आगरा।
4. पाठक, पी.डी. (2004), ''शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवन युनि. रोड इलाहाबाद।
5. राम पारस नाथ, ''अनुसंधान परिचय''आगरा, लक्ष्मीनरायण अग्रवाल।
6. सिंह, अरूण कुमार (2003), ''शिक्षा मनोविज्ञान'' पटना, भारती भवन।